शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह-अगस्त, 2022

अष्ठम वर्ष अंक -03

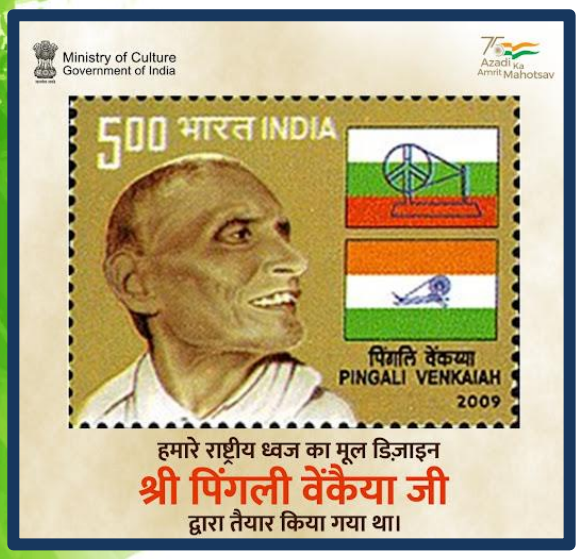

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: विज्ञान एवं गणित क्लब का संचालन

उच्च प्राथमिक से लेकर हायर सेकन्डरी स्तर तक के शालाओं में गणित एवं विज्ञान क्लब का गठन कर उनके माध्यम से निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है-

1. मासिक बैठकों का आयोजन कर विद्यार्थियों को गणित/विज्ञान विषय को रुचिकर बनाने एवं विभिन्न मुद्दों पर समझ हेतु विभिन्न रणनीतियों का निर्धारण करना |
2. विज्ञान/ गणित विषय से संबंधित विशेषज्ञों को आमंत्रित करना, आनलाइन कक्षाओं/ वेबीनारों का आयोजन कर उसका लाभ लेना |
3. शाला में विभिन्न विषयों के नियमित कक्षा अध्यापन ने साथ-साथ प्रयोग प्रदर्शन के माध्यम से अवधारणाओं को स्पष्ट करने हेतु प्रयोगों का समर्थन लेना |
4. आसपास उपलब्ध विभिन्न गणित-विज्ञान से संबंधित शिक्षण / अटल टिंकरिंग लैब का एक्सपोजर भ्रमण, अभ्यास एवं अवलोकन से सीखने का अवसर देना |
5. गणित/ विज्ञान से संबंधित सहायक सामग्री का निर्माण एवं बच्चों को विभिन्न प्रयोगों को करके दिखाने हेतु आवश्यक सहायक सामग्री स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों से बनाकर रखते हुए नियमित उपयोग हेतु लर्निंग कार्नर में रखना |
6. विद्यार्थियों की मदद से गणित/विज्ञान से संबंधित विभिन्न चेप्टर्स के लिए चार्ट, पोस्टर, प्रयोग आदि तय कर उनका निर्माण एवं उनके प्रदर्शन हेतु गणित/ विज्ञान लर्निंग कार्नर का गठन |
7. गणित/विज्ञान से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं को लेकर समुदाय एवं विशेषज्ञों के माध्यम से उन पर कार्य करना जैसे अंध-श्रद्धा उन्मूलन की दिशा में जन-जागरूकता |
8. गणित/विज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी एवं उनमें शामिल होने हेतु आवश्यक तैयारियां/ कोचिंग की व्यवस्था/ ओलंपियाड एवं क्विज का आयोजन कर सभी विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता |
9. विज्ञान एवं गणित से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण दिवस का आयोजन किया जाए जैसे गणित सप्ताह, विज्ञान दिवस, पृथ्वी दिवस, पर्यावरण दिवस, जनसंख्या दिवस, प्रकृति संरक्षण दिवस आदि |
10. समुदाय को रेन-वाटर हार्वेस्टिंग, प्रदूषण, जैविक खेती, गोबर से कम्पोस्ट खाद बनाने, किचन गार्डन, कोचिंग कक्षाओं के संचालन में सहयोग लेने हेतु बैठकें |
11. क्लब की गतिविधियों को एक दूसरे से साझा करने हेतु राज्य स्तर से निर्धारित किसी सोशियल मीडिया का उपयोग करते हुए एक प्लेटफोर्म में विभिन्न जानकारियों को साझा करना |

12. ग्रीष्मावकाश के दौरान विद्यार्थियों को सक्रिय रखने हेतु समर कैम्प के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करना
13. गाँव में पर्यावरण एवं स्वच्छता की जानकारी लेने एवं देने के उद्देश्य से नेचर वाक, नदी एवं तालाबों के किनारों का भ्रमण एवं गन्दगी के क्षेत्रों/ कारणों का पता कर सुधार हेतु आवश्यक प्रयास
14. प्रत्येक शाला अपने यहाँ किसी एक या अधिक स्थानीय लोक कला के विकास के लिए फोकस होकर कार्य करेंगी | उदाहरण के लिए यदि आदिवासी चित्रकला/ बांसकला/काष्ठकला जैसे किसी भी ट्रेड में स्थानीय कुशल कलाकार हों तो उनका सहयोग लेकर स्कूल में इन कलाओं को प्रोत्साहन देते हुए शाला समय से अतिरिक्त समय में इनके सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया जा सकता है | इन कार्यों के माध्यम से गणित एवं विज्ञान के विभिन्न अनछुए पहलुओं पर कार्य किया जा सकता है
15. स्थानीय कुशल कृषक/ व्यावसायिक शिक्षा के कृषि संकाय के शिक्षकों से समर्थन लेकर स्कूल क्लब के माध्यम से परिसर को हरा-भरा करना, बच्चों को कृषि संबंधी कार्यों का अनुभव लेना, कृषि, बागवानी, पशु-पालन से संबंधित विभिन्न कार्यों का अनुभव लेने का अवसर साथ-साथ मिलकर उनकी रूचि के अनुसार करवाया जाकर कार्यों का अनुभव लाभ दिलवाएं
16. मध्याह्न भोजन में उपयोग में लाए जाने हेतु सब्जी, वृक्ष एवं पेड़-पौधे परिसर में लगवाते हुए क्लब के माध्यम से उनकी सुरक्षा एवं देखरेख किया जाएगा
17. सामाजिक जागरूकता एवं जनजागरण से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर क्लब द्वारा नुक्कड़ नाटक तैयार कर समुदाय के समक्ष समय समय पर आयोजित किया जाएगा |
18. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में बच्चों को सफल बनाने के उद्देश्य से शाला समय से अतिरिक्त समय में विशेष कोचिंग कक्षाओं का आयोजन
19. निकट की शाला के साथ ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत एक दूसरी शालाओं के क्लब द्वारा आपस में सहमति से एक्सचेंज कार्यक्रम/ प्रतियोगिताओं का आयोजन
20. स्कूल के पुराने विद्यार्थियों का समूह एलुमनी ग्रुप बनाकर उन्हें समय समय में स्कूल में आमंत्रित कर विभिन्न कार्य्रकमों का आयोजन कर उनके माध्यम से स्कूलों को आवश्यक समर्थन देना

उपरोक्त कार्यों के लिए चयनित उच्च प्राथमिक एवं सभी हाई-हायर सेकन्डरी स्कूलों को रूपए पांच हजार दिए जा रहे हैं | शेष शालाएं अपने अन्य मद या शाला अनुदान से इन कार्यों में बजट का उपयोग कर सकते हैं |

एजेंडा दो: चलो पढ़े एक साथ अभियान

क्या आपने अपने शहर या गाँव में सभी बच्चों को सुबह और शाम एक साथ एक जगह में बैठकर पूरे अनुशासन के साथ समय का पालन कर पढ़ते हुए देखा है ? यदि नहीं तो आप आज चलिए धमतरी जिले के धमतरी विकासखंड के शासकीय प्राथमिक शाला मुजगहन !

इस विद्यालय में एक नवाचारी शिक्षक हैं- श्री दीनबन्धु सिन्हा | उन्होंने अपने नवाचारी शिक्षक होने के प्रमाण एवं नवाचारों के क्रियान्वयन को जारी रखे जाने की श्रंखला में एक और बढ़िया नवाचार किया है- **"चलो पढो एक साथ अभियान"**

इस अभियान में समुदाय एवं पालकों को इस प्रकार से प्रेरित किया गया है कि वे अपने बच्चों को सुबह सुबह सात बजे से आठ बजे न्यूनतम एक घंटा एवं शाम को छह बजे से सात बजे एक घंटा की कक्षा लगाई जाती है | श्री दीनबन्धु शुरुआती दौर में गाँव में घूम-घूमकर बच्चों को सीखने एवं इस कक्षा में शामिल होने हेतु प्रेरित करते हैं | पालकों को भी वे इस तरह की कक्षा से होने वाले लाभ से अवगत करवाते हुए सुबह एवं शाम की कक्षा में नियमित समय पर भेजने हेतु प्रेरित करते हैं | यदि कुछ बच्चे खेलने में लगे रहें तो बाकी बच्चों का पढाई में मन नहीं लगेगा | इसको ध्यान में रखते हुए यह तय किया गया है कि सभी बच्चे इन कक्षाओं से प्रतिदिन जुड़ेंगे | प्रत्येक मोहल्ले में बच्चों के समूह हैं जो सभी बच्चों की समय पर इन कक्षाओं में उपस्थिति की निगरानी रखते हैं | सुबह स्कूल की प्रार्थना सभा में ये बच्च उन बच्चों की जानकारी देते हैं जो उस दिन ऐसी कक्षाओं में उपस्थित नहीं हुए | उन्हें शिक्षकों द्वारा समझाइश दी जाती है |

श्री दीनबंधू के इस नवाचार से बच्चों का पढाई में मन लग रहा है और उनकी नियमित अध्ययन की आदत भी बन रही है | इसका परिणाम भी अच्छा मिल रहा है | अब सबको स्कूल में नियमित अध्ययन के साथ-साथ सुबह और शाम को भी पढने की आदत लग गयी है | क्या ऐसा आप अपने गाँव/ शहर में कर सकते हैं ?

एजेंडा तीन: सही प्रश्न पूछना सीखें

Teacher addresses a student and asks: “How many kidneys do we have?"

“Four!", The backbencher student responds.

“Four? Haha,” The teacher was one of those who took pleasure in picking on his students' mistakes and demoralizing them.

“Bring a bundle of grass, because we have a donkey in the room," the teacher orders a front bencher.

“And for me a coffee!”, the backbencher student added.

The teacher was furious and expelled the student from the room.

The student was, by the way, a famous humorist namely Aparicio Torelly Aporelly (1895-1971), better known as the "Baron de Iterate".

On his way out of the classroom, the student still had the audacity to correct the furious teacher:

"You asked me how many kidneys we have. "We have four: two of mine and two of yours. ‘We have’ is an expression used for the plural. Enjoy the grass".

एजेंडा चार: भाषाई सर्वे

छत्तीसगढ़ शासन, समग्र शिक्षा राज्य परियोजना कार्यालय और SCERT द्वारा राज्य में भाषायी सर्वेक्षण कराया गया। देश में इस प्रकार का सर्वेक्षण कराने वाला छत्तीसगढ़ पहला राज्य है। 21 फ़रवरी से 5 अप्रैल 2022 के बीच राज्य के प्राथमिक शालाओं में यह सर्वेक्षण किया गया जिसमें 146 विकासखंड एवं 2,451 संकुलों के 29,755 प्राथमिक शालाओं से कक्षा-1 में पढ़ने वाले बच्चों के घर की भाषाओं, शिक्षकों की उन भाषाओं को समझने और बोलने की दक्षताओं के आँकड़े एकत्रित किए गए। इस सर्वेक्षण में कुल 4,12,973 बच्चों ने हिस्सा लिया।

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन ने सर्वेक्षण द्वारा इस सर्वे को आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यूनिसेफ ने उन्हें सहयोग प्रदान किया | चूंकि यह सर्वेक्षण शिक्षकों द्वारा ही किया जाना था, अतः सभी शिक्षकों का कई चरणों में क्षमता निर्माण किया गया। भाषायी सर्वेक्षण के मुख्य परिणाम इस प्रकार रहे-

- भाषायी सर्वेक्षण के अंतरिम परिणाम दर्शाते हैं कि राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा-1 के करीब 15.5 प्रतिशत बच्चे हिन्दी बिल्कुल नहीं जानते, जो शिक्षण का माध्यम है।
- करीब 60 प्रतिशत बच्चों में थोड़ी-बहुत हिन्दी की समझ है पर हिन्दी की अकादमिक भाषा, जिनमें पाठ्यपुस्तकें बनाई जाती हैं, परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं, की समझ सीमित है।
- आँकड़े दर्शाते हैं कि पूरे राज्य में बच्चे 24 से ज़्यादा भाषाएँ बोलते हैं जो हिन्दी से बहुत अलग हैं। बच्चों द्वारा बोली जाने वाली ये भाषाएँ विभिन्न ज़िलों में विभिन्न लहज़े और काफी अलग शब्दों के साथ बोली जाती हैं। जैसे- राज्य में तीन तरह की गोंडी बोली जाती है, गोंडी (बस्तर), गोंडी (दंतेवाड़ा), और गोंडी (कांकेर) परन्तु इन तीनों ही भाषाओं में काफी विविधता है।
- करीब 5000 स्कूल ऐसे हैं जहाँ 90% से ज़्यादा बच्चे कोई आदिवासी भाषा बोलते हैं और करीब 1100 शिक्षक बच्चों की ये भाषाएँ नहीं बोल पाते।
- आँकड़े यह भी दर्शाते हैं कि करीब 8000 शिक्षक बच्चों के घर की भाषा को कुछ हद तक समझने और बोलने की क्षमता रखते हैं।
- राज्य के करीब 75 प्रतिशत विद्यालयों के बच्चे किसी अपरिचित भाषा में सीखने के कारण सीखने में माध्यम से गंभीर स्तर तक की कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

- सर्वेक्षण के आँकड़ों के अनुसार अपरिचित भाषा में सीखने के कारण कठिनाइयों का सामना करने वाले बच्चे ज़्यादातर आदिवासी ज़िलों, सुकमा, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, बस्तर और अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों के ज़िलों के हैं।

भाषायी सर्वेक्षण के आधार पर आगामी रणनीतियां

- विभिन्न जिलों में हितग्राहियों के साथ इस सर्वे के परिणामों के आधार पर शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को उनकी भाषा में सीखने के अवसर देने हेतु समर्थन एवं संसाधन जुटाना
- शिक्षकों का कक्षाओं में स्थानीय भाषा के उपयोग किए जाने हेतु संवेदनशील बनाए जाने एम.एल.ई. आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम
- विभिन्न क्षेत्र विशेष में बोले एवं उपयोग में लाई जाने वाली भाषाओं के आधार पर बच्चों के लिए अभ्यास सामग्री का निर्माण एवं उपयोग हेतु वितरण
- बालवाडी स्तर से ही भाषा सीखना आसान बनाने हेतु स्थानीय भाषा, सामान्य बोलचाल के लिए अंग्रेजी भाषा सीखने हेतु सुविधाएं एवं संसाधन प्रदान करना
- शिक्षकों को बच्चों की भाषा सीखने हेतु प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से अवसर प्रदान करने हेतु on demand training की सुविधा उपलब्ध करवाना ।
- विभिन्न भाषाओं में अब तक तैयार सामग्री की समीक्षा कर समुदाय एवं संबंधित भाषा विशेषज्ञों के सहयोग से शिक्षकों को कक्षा शिक्षण से विलग न करते हुए आवश्यक अतिरिक्त सामग्री तैयार किए जाने हेतु योजना।
- FLN के अंतर्गत शिक्षकों के प्रशिक्षण में MLE को एक विशेष मुद्दे के रूप में शामिल करते हुए उन्मुखीकरण एवं आदिवासी/ स्कूली भाषा से इतर अन्य भाषाई क्षेत्रों में भाषा/ गणित सीखने के नवाचारी तरीकों पर जानकारी साझा करना।
- टेक्नोलोजी का उपयोग कर बच्चों को भाषा सीखने में सहयोग हेतु आवश्यक संसाधन सुलभ करवाना
  - ❖ क्या आपने इस बार पर ध्यान दिया है कि आपके द्वारा पढ़ाते समय बच्चे समझ में आ गया की स्टाइल में सर हिलाते हैं पर कई बार वास्तव में उन्हें कुछ समझ में नहीं आता !
  - ❖ क्या आपकी कक्षा में बच्चों के घर की भाषा एवं स्कूल की भाषा में अंतर है और आपके द्वारा इस अंतर को पाटने हेतु किन-किन तरीकों का इस्तेमाल करते हो ?
  - ❖ क्या आपको नहीं लगता कि बच्चों को एक बार स्कूल की भाषा अच्छे से आ जाए तो बाकी विषय सिखाना बहुत ही आसान हो जाता है ?

एजेंडा पांच: वर्षामापी यंत्र

आपको याद होगा हमने आज से कुछ वर्ष पूर्व वर्षा ऋतू के समय हमने आपको वर्षामापक यंत्र बनाना सिखाया था | अधिकांश शिक्षकों ने अपने विद्यालय प्रांगण में वर्षामापक यंत्र लगाकर बच्चों के माध्यम से प्रतिदिन हुई वर्षा के रिकार्ड रखने की जिम्मेदारी देते हुए भूगोल एवं गणित विषय को जोड़ते हुए बेहतर उदाहरण प्रस्तुत किया | इतने वर्षों बाद भी हमारे एक साथी ने उस वर्ष बताई गयी वर्षामापक यंत्र को याद कर इस बार पुनः उसका उपयोग अपनी शाला में करना शुरू किया |

"आज हमारे विद्यालय के बच्चों ने आगामी वर्षा ऋतु के चार माह (1 जुलाई से 31 अक्टूबर 2022) तिलाईदादर में होने वाले वर्षा मापन के लिए वर्षा मापी यंत्र स्थापित कर दिया है। हम सब अच्छी वर्षा के उम्मीद के साथ"

नाम - विरेन्द्र कुमार चौधरी, संस्था - शा. प्रा. शाला तिलाईदादर, संकुल – बिरनडबरी, विकास खण्ड – बसना, जिला - महासमुंद (छग)

एजेंडा छह: परिसर के भीतर के बाहरी दीवार पर फोटो

राज्य में सभी शालाओं में कार्यरत शासकीय शिक्षकों के फोटोग्राफ लगाया जाना है | आपमें से अधिकांश के स्कूलों में पहले से ये फोटो लगे होंगे | कुछ सुदूर अंचलों में कार्यरत शिक्षक अपनी सरकारी नौकरी को बचाए रखते हुए बाहर कुछ और काम-धंधे करते हैं | वे अपने बदले शासन एवं स्वयं को धोखा देते हुए एवजी शिक्षक रखते हैं जिसे वे कुछ हजार मासिक वेतन में रखकर उनसे अपने बदले स्कूल में दिखाते हुए काम करवाते रहते हैं | शाला परिवार को सही शिक्षक की जानकारी नहीं होती या आपस में वे सेट कर लेते हैं | परिसर के भीतर के बाहरी दीवार में फोटो लगाने से समुदाय भी अपने शाला में पदस्थ वास्तविक शिक्षकों की पहचान रहेगी एवं फ्रोड शिक्षकों को अपने बदले एवजी रखने में डर बना रहेगा।

एजेंडा सात: बच्चो द्वारा स्वतंत्र कहानी लेखन पर मेरे अनुभव

कहानियाँ, कहानियाँ और कहानियाँ !! बच्चे हों या बड़े, कहानियाँ सुनना और पढ़ना सभी को अच्छा लगता है | पर कहानी लेखन, वो भी बच्चो द्वारा, उनकी मौलिक कहानी लेखन, ये विचार जब मैंने चर्चा पत्र मे पढ़ा, तब मुझे यह बहुत ही रोमांचक लगा !! मैंने सोचा क्यों ना मैं भी अपनी शाला के बच्चों को ये अवसर दूं , उन्हें प्रेरित करूं कि वे कहानी लेखन का कार्य करें, क्योंकि जिस तरह कहानी पढ़ने या सुनने से उनकी कल्पनाशक्ति व रचनात्मक सोच का विकास होता है उसी तरह लेखन से इसमे और अधिक वृद्धि होगी और वे अपनी एक समझ विकसित कर पाएंगे |

जब मैंने बच्चो को इस तरह स्वतंत्र कहानी लेखन के लिए कहा तो बहुत से बच्चों ने बड़े ही उत्साह से स्वीकार किया | परंतु उनमें से कुछ ही कहानी लिख पाये क्योंकि कहानी लेखन की पहली शर्त ही यह थी कि ये मौलिक कहानी होनी चाहिए | बहुत से बच्चों ने इस शर्त का पालन किया |

बहुत से बच्चों ने स्वयं उस कहानी से संबंधित चित्र भी बनाए | कुछ ने उसमे अपने मित्रों से चित्र बनवाए। इस तरह मेरे बच्चों ने बहुत ही सुंदर सचित्र कहानियों की एक संकलित कहानी पुस्तक तैयार की जिसे मैंने अपनी शाला के मुस्कान पुस्तकालय मे संग्रहित कर लिया |

इन कहानियों को पढ़कर दूसरे बच्चों ने भी कहानी लिखने मे रुचि दिखाई है | इन कहानियों को पढ़कर मैंने पाया कि इससे बच्चो के शब्दकोश मे वृद्धि और संचार कौशल का विकास हुआ एवं उनके सीखने कि प्रक्रिया मे तेजी आई और वे अपनी एक समझ विकसित कर पाए | जिसे देखकर मुझे बहुत ही खुशी हुई | पूरी चर्चा पत्र टीम को बहुत बहुत धन्यवाद कि उन्होंने बच्चों को ये सुनहरा अवसर दिया |

- श्रीमती नीतिका जेकब (शिक्षक) मा.शाला पुरानी बस्ती कोरबा वि.ख.- कोरबा जिला – कोरबा

चर्चा पत्र के अगले अंक में हम आपसे “हर घर तिरंगा” कार्यक्रम को अपने क्षेत्र के अधिक से अधिक घरों तक पहुँचाने, उनमें देशभक्ति की भावना विकसित करने के उद्देश्य से आपके द्वारा की गयी कार्यवाहियों/ गतिविधियों आदि के संबंध में आपके अनुभव हमें लिख बजें | आप अपने अनुभवों पर आधारित अपना एक पेज का आलेख एवं उससे संबंधित फोटोग्राफ को हमारे ईमेल charchapatra@gmail.com में भेज सकते हैं | आलेख को अगले अंक में स्थान मिलेगा |

एजेंडा आठ: निपुण भारत अभियान शपथ/ Pledge

इस शपथ को सभी शिक्षकों, शाला प्रबन्धन समिति, पालकों एवं शिक्षा में रूचि लेने वाले सभी समुदाय के सदस्यों को लेनी चाहिए | आप चाहें तो इसका स्थानीय भाषा में अनुवाद कर भी इसे समुदाय के समक्ष पढने को दे सकते हैं –

आओ एकजुट होकर हाथ मिलाएं यह सुनिश्चित करने के लिए कि हर बच्चा / बच्ची करें हासिल बुनियादी शिक्षा कौशल, ऐसा अनुकूल मिले उन्हें वातावरण |

हम शपथ लेते हैं कि स्कूल बने एक ऐसी जगह जहाँ हो आनंदपूर्ण और अनुभवात्मक अधिगम, और जहाँ बच्चे अपनी भाषा स्वछन्दता से इस्तेमाल कर सकें, स्वछंदता से सवाल पूछ सकें, खुलकर खेल सकें, और जहाँ हर बच्चे का हो सम्मान |

आओ घर को और स्कूल को बनाएं एक ऐसी जगह जहाँ बच्चे समझ के साथ पढ़ें, उद्देश्य के साथ लिखें और संख्या ज्ञान सीखें; जो कि वे अपनी रोज़ मर्रा की जिन्दगी में उतार पाएं और उनके जीवन भर के सीखने के कौशल का विकास हो सके |

आओं यह सतत प्रयास करें कि भारत के हर बच्चे को मिले ऐसी शिक्षा जो हो सरस और सार्थक ताकि हर बच्चा /बच्ची बने निपुण |

जय हिन्द |

NIPUN Bharat Mission Pledge

Let us join hands to ensure a conducive learning environment enabling all children to achieve foundational skills.

We pledge to make the school a place of joyful and experiential learning where children can use their language freely, ask questions freely, play freely, and where every child is respected.

Let us make the school as well as the home, a place for developing lifelong skills for reading with comprehension, writing with purpose and understanding numeracy, in every child that they can apply in their everyday life situations.

Let us strive to make education meaningful and joyful for each child of our country and make every child NIPUN.

Jai Hind!

निपुण भारत शपथ का वीडियो https://www.youtube.com/watch?v=iQuyOIT4vi0

एजेंडा नौ: दो चित्र

Video Link - हम स्कूल से नहीं जाएंगे

ऊपर का चित्र एवं उसके बगल के वीडियो को ध्यान से देखें | पहले चित्र में बच्चे को जबरदस्ती शिक्षक और पालक स्कूल ले जाने का प्रयास कर रहे हैं | बगल के दूसरे वीडियो में स्कूल की छुट्टी होने के बाद बच्चों को घर जाने बोलने के बावजूद भी बच्चे घर नहीं जाना चाहते | स्कूल में ही रहकर गतिविधि करते रहना चाहते हैं | हमने पता करने का प्रयास किया कि उस शाला के शिक्षक ऐसा क्या करते हैं जिसकी वजह से बच्चों को शाला में मजा आता है | हमें ये कुछ कारण दिखाई दिए-

1. खेल-खेल के साथ पढाई की शुरुआत
2. हाजिरी लेते समय प्रत्येक बच्चे के साथ हंसी-ठिठोली के साथ संक्षिप्त वार्तालाप
3. बच्चों की रूचि के अनुसार विषय क अध्यापन
4. छोटे-छोटे गीत-कविताओं के माध्यम से विषय के अवधारणाओं को समझाने का प्रयास
5. बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करना
6. बच्चों को अभिव्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता
7. शिक्षक स्वयं मित्र बनकर बच्चों के साथ समय निकालकर खेलना
8. बच्चों के साथ उनके स्थानीय भाषा बोली में बातचीत
9. कक्षा के वातावरण को बच्चों के घर जैसा बनाना
10. कक्षा के बच्चों को अपने घर के बच्चों जैसी देखभाल एवं व्यवहार करना

आइए देखें कोरबा के श्री गोकुल मार्बल का स्कूल ! इन्होने स्कूल को ऐसे सजाया है कि कोई भी इस स्कूल को छोड़कर बाहर जाना चाहेगा क्या ? (वीडियो- https://youtu.be/sPAFnzQOSEA)

एजेंडा दस: शालाओं का निरीक्षण

राज्य में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा अपने निरीक्षण के लिए नियुक्त अमले से राज्यव्यापी निरीक्षण करते हुए विभिन्न कार्यों की जमीनी स्थिति जानने की दिशा में बहु-प्रतीक्षित कार्य प्रारंभ कर दिया है | ऐसा करने से योजनाओं की धरातल पर वास्तविक स्थिति का पता चलाकर स्थिति में सुधार लाया जा सकेगा।

इस हेतु दिनांक 02.07.2022 एवं 16.07.2022 को शालाओं की एक दिवसीय मानिटरिंग की गई जिसमें से पहले मानिटरिंग में कुल 14252 शालाओं का एवं दूसरे मानिटरिंग में कुल 10317 शालाओं का निरीक्षण किया गया | इस निरीक्षण से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष इस प्रकार हैं-

- लगभग 98% शालाओं में शासन के निर्देशानुसार शाला प्रवेशोत्सव का आयोजन हुआ है।
- माह जून, 2022 में औसत ग्यारह दिन कक्षाओं का आयोजन हुआ है।
- केवल 42% प्राथमिक शालाओं में स्कूल रेडीनेस कार्यक्रम संचालित हो रहा है।
- लगभग 93% शालाओं में बच्चों को पुस्तकें मिल गयी हैं।
- निरीक्षण के दिन लगभग २५% शालाओं में शिक्षक किसी न किसी कारण से उपस्थित नहीं थे। कुल शिक्षकों में से लगभग 8% शिक्षक निरीक्षण के दिवस शाला में नहीं थे।
- निरीक्षण के दिन लगभग 22% बच्चे अनुपस्थित पाए गए।
- लगभग 93% शालाओं में बस्ताविहीन कक्षाओं का संचालन किया जाना पाया गया।
- ८५% शालाओं में पालकों के साथ बैठक आयोजित कर ली गयी है ।
- प्रति शाला औसत ०.००७% शाला से बाहर के बच्चों ने प्रवेश लिया है।
- प्रति शाला औसत ०.011% CWSN के बच्चों ने प्रवेश लिया है।

निरीक्षण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए आगे हम इन बिन्दुओं पर भी बड़ी संख्या में शालाओं का निरीक्षण करते हुए जमीनी वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर फोलो-अप एक्शन ले सकेंगे-

- राज्य से जारी विभिन्न निर्देशों का शत-प्रतिशत शालाओं में पालन सुनिश्चित करने हेतु नियमित अंतराल से विभिन्न मुद्दों पर निरीक्षण जैसे- पालक सम्मेलन/ आंगनबाडी के साथ लिंकेज/ ट्विनिंग ऑफ़ स्कूल आदि आदि।
- बच्चों का असर टूल के आधार पर टेली-प्रेक्टीज एप्प के माध्यम से सर्वेक्षण करना।
- शिक्षक अनुपस्थिति के संबंध में औचक निरीक्षण कर उपस्थिति को नियमित करना।
- चर्चा पत्र का नियमित अध्ययन एवं शिक्षकों का उस पर आधारित on demand आकलन।